परिस्थिति - वरदान या अभिशाप

• ब्रह्माकुमार नरेश, मुजफ्फरनगर

कहावत है कि 'धीरज, धर्म, मित्र अरु नारी। आपातकाल परिखहिं चारी' अर्थात् अपने अंदर कितना धीरज है, धर्मपरायणता कितनी है, मित्र साथ निभाने वाला है या नहीं एवं जीवन-साथी बुरे वक्त में कितना साथ देता है, इनकी परख आपातकाल में ही हो पाती है। दूसरे शब्दों में, कोई किस मिट्टी का बना है यह तो वक्त या परिस्थिति के आने पर ही पता पड़ता है।

एक बड़े धनाढ्य व धर्मपरायण सज्जन व्यक्ति थे जिनका समाज में उच्च स्थान था परन्तु उनका नौकर इतना बदतमीज़ था कि वह किसी के भी सामने अपने मालिक का अपमान कर देता था। एक बार शुभचिन्तकों के काफी पूछने पर उन्होंने बतलाया कि वे इस नौकर को इसलिए नहीं निकालते क्योंकि यह उनकी आध्यात्मिक प्रगति का साधन है। समाज में मेरा इतना ज़्यादा मान-सम्मान है कि मेरी आंतरिक शक्तियों को कार्य करने का कभी भी मौका नहीं मिलता। मेरी सहनशक्ति व निरहंकारिता का यह नौकर स्रोत है।

महान दार्शनिक सुकरात की पत्नी अत्यधिक कलहकारिणी थी। एक दिन जब सुकरात चिन्तन-मग्न थे तो वह उन पर 'यह कर', 'वह कर' की आज्ञा हांकने लगी। सुकरात को फिर भी ध्यानमग्न देख कर उसने गरज-गरज कर तूफान खड़ा कर दिया और अंत में गुस्से में गंदे पानी से भरा बर्तन उनके सिर पर पलट दिया। सुकरात ने हँसते हुए कहा कि 'आज यह कहावत गलत साबित हुई कि गरजते बादल बरसते नहीं हैं।' सुकरात ने परिस्थितियों के बीच रहते हुए ही ऐतिहासिक महानता प्राप्त की थी।

महाकवि मिल्टन ने नेत्रहीन होते हुए भी विश्व के प्रसिद्ध कवियों में अपना स्थान बना लिया। 'पैराडाइज लोस्ट' लिखने के लिए वे रोज़ सुबह चार बजे उठा करते थे। जितने भी महान काव्य या ग्रंथों की रचना हुई है, वे विभिन्न लेखकों द्वारा या तो जेल में रहते लिखे गये या फिर लंबे एकान्तवास के दौरान। मनुष्य जब शरीर से दुनियादारी में फँसा होता है तो उसके मन-बुद्धि कैद हो जाते हैं और जब वह शरीर से कैदी होता है तो मन-बुद्धि आज़ाद हो श्रेष्ठ चिन्तन व लेखन कार्य कराते हैं। थॉमस एल्वा एडिसन ने सैकड़ों आविष्कार किये। उनके सामने एक से बढ़कर एक परिस्थिति आई परन्तु उन्होंने उनकी उपेक्षा की और भीषण हलचल में भी लक्ष्य के प्रति डटे रहे।

हलचल परिपक्वता लाती है, अनुभवी बनाती है। यह टीचर बन पाठ पढ़ाती है। यह त्रिकालदर्शी व त्रिनेत्री बनाती है। यह माया के भिन्न-भिन्न स्वरूपों का अनुभव करा कर आगे के लिए सावधान करती है। परिस्थिति से यदि बहादुरी से निपटा जाये तो यह दो विशेष शक्तियों का अनुभवी बना कर जाती है, जो हैं – 'सहनशक्ति' व 'सामना करने की शक्ति।'

परमपिता शिवबाबा ने परिस्थिति का सामना करने के संबंध में कहा है – ''सदा अपने को मास्टर सर्वशक्तिवान अनुभव करते हो? इस स्वरूप की स्मृति में रहने से हर परिस्थिति साइडसीन अनुभव होगी। रास्ते के नज़ारों को देखकर खुशी होती है, घबराते नहीं। तो विघ्न, विघ्न नहीं है लेकिन विघ्न आगे बढ़ने का साधन है।'' मास्टर सर्वशक्तिवान कैसे बना जाये, इसकी युक्तियाँ 'सहज राजयोग' की नित्य लगने वाली कक्षाओं में सिखलाई जाती हैं। अचल से हलचल में आने के मुख्य तीन कारण शिव बाबा ने बतलाये हैं – ''अशुभ व व्यर्थ सोचना, अशुभ व व्यर्थ बोलना और अशुभ व व्यर्थ करना।''

गणेश को देवताओं में 'विघ्न